स्त्रीप्रत्यय प्रकरण

भूमिका

संस्कृतभाषा में प्रातिपदिक संज्ञक शब्दों के तीन अर्थ हैं। जाति, व्यक्ति और लिङ्ग। यहां तीन लिङ्ग होते हैं। पुस्त्वम्, स्त्रीत्व, और नपुंसकत्व। (पुल्लिंग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिंङ्ग)। पुस्त्व क्या है? स्त्रीत्व क्या है? और नपुंसकत्व क्या है? ऐसी जिज्ञासा होने पर शास्त्राकारों द्वारा तीन लिङ्गों के लक्षण कहा गया है?

स्तनकेशवती स्त्री स्थाल्लोमशः पुरुषः स्मृतः।
उभयोरत्तरं यच्च तदभावे नपुंसकम्।

स्तनवती स्त्री होती है। लोमवान (शरीर पर रोम या छोटे बाल वाला) पुरुष होता है। उसके अभाव में स्तनकेशलोमादित्व से स्त्रीत्व से लक्षण फलित होता है। लोमादित्व से पुस्त्व के लक्षण प्रतिफलित होते हैं। स्तनकेशलोमादिव्यजक के अभाव में होने पर उन दोनों में अन्तर सादृश्य होता है। वह नपुंसक होता है। इससे स्तनकेशादि स्त्रीत्व का लक्षण प्रतिफलित होती लोमादि से पुरुष का लक्षण प्रतिफलित होती है और स्तनकेशलोमादि के अभाव विशिष्ट दोनों का सादृश्य का अभाव हो वहाँ नपुंसकत्व का लक्षण प्रतिफलित होता है। परन्तु लिङ्ग का यह लौकिक लक्षण जडपदार्थों में सम्भव नहीं है। जैसे:—वृक्षादि प्रदार्थों का लिङ्ग दिखाई नहीं देता है। क्योंकि यहां लोमादिक नहीं है। खट्वा आदि पदार्थों का कुछ भी लक्षण दिखाई नहीं देता है। क्योंकि यहाँ स्तनकेश आदि नहीं है। अत: दोषयुक्त यह लक्षण है। तथाहि सुहृद: पर्यायभूत मित्र शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है। अर्थात् नपुंसकलिङ्ग विशिष्ट अर्थ का वाचक है। किन्तु मित्र वाच्य अर्थ तो बालिका हो सकती है और बालक भी हो सकता है। और यह (मित्र) स्तनकेशवती हो सकती है और लोभवान भी हो सकता है।

लौकिक लक्षण के अनुसार मित्र पद का अर्थ स्त्रीत्व भी प्राप्त हो सकता है और पुंस्त्व भी प्राप्त हो सकता है। किन्तु मित्र शब्द नित्यनपुंसक लिङ्गविशिष्ट अर्थ का वाचक है। अत एव यह शब्द नित्यनपुंसक लिङ्ग होता है ऐसा व्यवहार। उससे इस लक्षण के अनुसार शास्त्र में लिङ्ग की व्यवस्था। अत: लौकिक लिङ्ग के लक्षण में दोषों को देखकर शास्त्रकर्त्ताओं द्वारा लिङ्ग का शास्त्रीय लक्षण कल्पित है। सत्त्वम्, रज:, तम: ये तीन गुण हैं। और ये गुण जड़ में और चेतन में होते हैं। पुन: प्रत्येक वस्तु होती है। और सत्व, रज और तम तीन गुण होते हैं। और ये गुण जड़ में और चेतन में होते हैं। पुन: प्रत्येक वस्तु होती हैं। और सत्व, रज और तम तीन गुण होते हैं। और ये गुण जड़ में और चेतन में होते हैं। पुनज्‍ प्रत्येक वस्तु होते हैं। और सत्वरजतम प्रकृतगुणों का उपचय: पुरत्व होता है। सत्वरजतम प्राकृत गुणों का अपचय स्त्रीत्व है। सत्वरजतम प्राकृत गुणों का स्थिति मात्र नपुंसकत्व है। प्रत्येक पदार्थ में तीन गुण

टिप्पणियाँ

होते हैं। पुनः प्रत्येक पदार्थ में इन गुणों का उपचय और उपचय स्थिति मात्र होती है। प्रत्येक पदार्थ में तीन होते हैं। परन्तु एकलिङ्गक पदार्थ कौन है? कौन सा द्विलिङ्गक पदार्थ है? और कौन त्रिलिङ्गक है यहाँ पर कोशादि ही प्रमाण है। जैसे:-तट शब्द लिङ्गजयविशिष्ट अर्थ का वाचक है। तट शब्द, तीनों लिङ्गों में होता है। अतः नित्यनपुंसक होते हैं। इसी प्रकार अन्य जगह भी इस का बोध होता है। उससे कस्य शब्द का लिङ्ग क्या है इसके ज्ञान के लिए अमरकोशादिग्रन्थ और लिङ्गानुशासन को पढ़ने चाहिए। उन शब्दों के लिङ्ग विषय में प्रामाणिक ज्ञान होता है।

9

स्त्रीप्रत्यय - चाप्, टाप्, डाप् प्रत्यय

तीनों लिङ्गों के मध्य पुरुत्व बोध के लिए और नपुंसकत्व के ज्ञान के लिए प्रत्ययान्तर अपेक्षित नहीं है। प्रातिपदिक से ही उनकी प्रतीति होती है। किन्तु स्त्रीत्वबोध के लिए कुछ प्रयास कल्पित हैं। औन वे हैं–

टाप्, डाप् चापस्त्रयोध्येते ङीप्-ङीष्-ङीन् प्रत्ययै सह।
जङ-तिभ्यां मिलिताश्चापि सन्त्यष्टौ प्रत्यया: स्त्रियाम्॥

टाप्, डाप्, चाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन्, ऊङ, ति ये आठ प्रत्यय स्त्रीत्व द्योतन के लिए प्रातिपदिक से होते हैं। किस प्रातिपदिक से टाप् होता है अथवा डाप् होता है ऐसा जानने के लिए प्रकृत प्रकरण प्रवर्त्त होते हैं। और यहाँ पर पाठ में टाप्, डाप्, चाप्, ङीन्, ति ये पाँच प्रत्यय किस प्रातिपदिक से होते है।'' ऐसा प्रतिपादित किया जा रहा है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- टाप्, डाप्, चाप्, ङीन्, ति इन पाँचों स्त्री प्रत्ययों को जान पाने में;
- टाप्, डाप्, चाप्, ङीन, ति ये पाँच स्त्री प्रत्ययों प्रयोग कर पाने में;
- इन प्रत्ययों के संयोजन से शब्दों में क्या-क्या परिवर्तन होता है ऐसा कर पाने में;
- इन प्रत्ययों का संयोजन करके स्त्रीलिङ्ग शब्दों का निर्माण कर पाने में;
- पठनपाठन काल में जहाँ-जहाँ शब्दों में कौन स्त्री प्रत्यय है? ऐसा सुस्पष्ट कर पाने में।

टिप्पणियाँ

अजाद्यतष्टाप्

सूत्रार्थ–स्त्रीत्व द्योत्ये होने पर आजादिगण में पठितशब्दान्त प्रातिपदिक से परे टाप् प्रत्यय होता है। एवं स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ह्रस्व अकरान्त से प्रातिपदिक से टाप् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। यह सूत्र टाप् प्रत्यय विधायक है। इस सूत्र में दो पद होते हैं। अजाद्यत: यह पञ्चम्येकवचनान्त पद है। टाप् प्रथमा एकवचनान्त पद है। यहाँ सूत्र में स्त्रियाम् (7/1) अधिकार जाता है। अपि च ङ्याप्प्रातिपदिकात् सूत्र से प्रातिपदिकात् पद की अनुवृत्ति आती है। ''प्रत्यय:'' और ''परश्च'' यहाँ अधिकार आ रहा है। इस सूत्र में अजाद्यत: पद में बहुव्रीहिगर्भसमाहार द्वन्द समास है। और इसका विग्रह होता है। अज: आदि: येषां ते अजादय: (अच् है आदि मे जिसके)। एवं अर्थ होता है–अचादि के और अकार दो। यहाँ अजादे: पद का अजादिगणपठितशब्द से है। अत: का हस्व अकार से अर्थ होता है। वहाँ अजादे: प्रातिपादिकात् इसका विशेषण होता है। अत: येन विधिस्तदन्तस्य इस सूत्र से अजादे: यहाँ तदन्तविधि होती है। और अजादे: का अर्थ होता है अजादिगण पठितशब्दान्त से है। एव अत: इसका भी प्रातिपदिकात् का विशेषण होता है। इसके बाद अत: यहाँ पर भी येन विधिरतदन्तस्य इस सूत्र से तदन्तविधि होत है। उससे अत: का अर्थ होता है ह्रस्व अकारान्त से। और सूत्रार्थ होता है–अजादिगणपठितशब्दान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर टाप् प्रत्यय पर होता है। एवं ह्रस्व अकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्थ होने पर टाप् प्रत्यय परे होता है।

उदाहरण:-अजा, खट्वा।

अजा

अजादिगण में पठित अज प्रातिपदिक पठित है पुन: व्यपदेशिवत् भाव से ''अजाद्यत्त भी है। और अजादिगणपठितशब्दात्त प्रातिपदिक है। अज शब्द प्रातिपदिक है। उससे स्त्रीत्व द्योतन के लिए अजाद्यतष्टाप् सूत्र से टाप् प्रत्यय होता है। और उससे अज टाप् ऐसी स्थिति होती है इसके बाद ''चुटू'' सूत्र से प्रत्यय के आदि टाप् के टकार की इत्संज्ञा होती है। और ''तक्यलोप:'' सूत्र से उसका लोप होता है। और इसके बाद अज आ यह स्थिति होती है। इसके बाद ''अक: सवर्णे दीर्घ:'' इस सूत्र से दीर्घ होने पर आजा रूप सिद्ध होता है और इसके बाद स्वादिप्रत्यय प्रयोग से प्रथमा एकवचन में अजा सुबन्त पद सिद्ध होता है। अन्य रूपों की सिद्धि प्रक्रिया अजन्त स्त्रीलिङ्ग रमाशब्द के समान हैं।

खट्वा

यहाँ खट्व शब्द प्रातिपदिक है। और इसका अन्त्यवर्ण ह्रस्व अकार है। उससे यहाँ प्रातिपदिक ह्रस्व अकारान्त है। और इसके बाद ह्रस्व अकारान्त से खट्व प्रातिपदिक से स्त्रीद्योतन के लिए अजाद्यतष्टाप् इस सूत्र से टाप् प्रत्यय होता है। और उससे खट्व टाप् होता है। इसके बाद ''चुटू'' इस सूत्र से टाप् के टकार की इत्संज्ञा होती है। और ''तस्यलोप:'' सूत्र से उसका लोप होता है। पुन: टाप् प्रत्यय के पकार की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा होती है। और ''तस्यलोप:'' सूत्र से उसका लोप होता है। और इसके बाद खट्व आ यह स्थिति होती है। इसके बाद ''अक: सवर्णे दीर्घ:'' इस सूत्र से दीर्घ होने पर खट्वा रूप सिद्ध होता है।

यहाँ अजादिगण में पठित शब्दों के अन्य उदाहरण हैं-अजा, एडका, अश्वा, चटका, मूषिका,

बाला, वत्सा, होडा, पाका, मन्दा, विलाता, कुञ्चा, उष्णिहा, देवविशा, ज्येष्ठा, कनिष्ठा, मध्यमा, कोकिला, दंष्ट्रा आदि।

यहाँ अदन्त प्रातिपदिक के अन्य उदाहरण है–

(9.2) ''डाबुआभ्यामन्यतरस्याम्'' (4.1.13)

सूत्रार्थ–मन्नन्त प्रातिपदिक से अन्नत बहुव्रीहिसंज्ञक से और प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर विकल्प से ङाप् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। यह सूत्र ङाप् प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। ङाप् प्रथमा एकवचनान्त पद है। उभाभ्याम् पञ्चमीद्विवचनान्त पद है। अन्यतरस्याम् अव्ययपद है। यहाँ मनः सूत्र से मन की अनुवृत्ति होती है। अनोबहुव्रीहेः इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति आती है। यहाँ सूत्र में ''स्त्रियाम्'' यह अधिकार आता है। ''प्रत्ययः'' (1/1) यह अधिकार और ''परश्च'' यह अधिकार यहाँ आता है। ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से प्रातिपदिक (5/9) की अनुवृत्ति आती है। यहाँ मन् का और अन् का प्रातिपदिक से विशेषण होता है। अतः ''येन विधिस्तदन्तस्य'' इस सूत्र से मनः यहाँ पर और अनः यहाँ पर तदन्त विधि होती है। उससे मनः का मन्नन्तात् यह अर्थ होता है। औ अनः का अन्नन्तात् (अद्यन्त से) से अर्थ होता है। बहुव्रीहेः भी प्रातिपदिकात् पद का विशेषण है। और सूत्र का अर्थ है ''मनन्नत प्रातिपदिक से अद्यन्त बहुव्रीहि से और प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योतक होने से विकल्प से ङाप् प्रत्यय होता है।

उदाहरण-दामा, बहुयन्वा

दामा

यहाँ दामन् शब्द प्रातिपदिक है। और मन्नन्त है। अतः मन्नन्त दामन् प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योद्यतन के लिए डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम्'' सूत्र से विकल्प से डाप् प्रत्यय होता है। और उससे दामन् डाप् स्थिति होती है। इसके बाद पर को ''चुटू'' सूत्र दो डकार की इत्संज्ञा होती है। उससे दामन आ स्थिति होती है। इसके बाद पर के टेः सूत्र से दामन् शब्द के टि के अन् का लोप होने पर दाम आ स्थिति होती है। और वर्णसम्मेलन होने पर दामा रूप सिद्ध होता है। डाप् प्रत्यय के अभाव में तो दामन् रूप ही बैठता है। उसी प्रकार दामा, पामा, सीमा, अतिमहिमा इत्यादि में भी बोध्य है।

बहुयज्वा

यहाँ बहुयज्वन् शब्द प्रातिपदिक है। और अन्नन्त है। पुनः यहाँ बहुव्रीहि समास भी है। अतः यह बहुव्रीहि संज्ञक भी है। और अन्नन्त बहुव्रीहि संज्ञक बहुयज्वन् प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योतन के लिए ''डाबुभाभ्यामन्यत स्थान् सूत्र से विकल्प से डाप् प्रत्यय होता है। और उससे बहुयज्वत् डाप् स्थिति होती है। इसके बाद पर को ''चुटू'' सूत्र से डकार की इत्संज्ञा होती है। और ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोपः'' उन दोनों का लोप होता है। उससे बहुयज्वन् आ स्थिति होती है। इसके पर ''टेः'' सूत्र से बहुयज्वन् शब्द के ''टेः'' सूत्र

टिप्पणियाँ

से अन् का लोप होने पर बहुयज्व् आ स्थिति होती है। और वर्णसम्मेलन होने पर बहुयज्वा रूप सिद्ध होता है। डाप् प्रत्यय के अभाव में बहुयज्वन् रूप बैठता है। उसी प्रकार सुचर्मा, सुपर्वा बहुराजा इत्यादि में भी बोध्य है।

(9.3) ''यङश्चाप्'' (4.1.74)

सूत्रार्थ–ञ्यङन्त प्रातिपदिक से और व्यङन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर चाप् प्रत्यय परे होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र द्वारा चाप् प्रत्यय का विधान होता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। यङ् यह पञ्चमी एकवचनान्त पद हैं। चाप् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। च'' यह अव्यय पद है। यहाँ सूत्र में ''स्त्रियाम्'' यह अधिकार आ रहा है। ''प्रत्ययः'' (1/1) यह अधिकार और ''परश्च'' यह अधिकार आ रहा है। यहाँ ''ङयाप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से प्रातिपदिकात् (5/1) पद की अनुवृत्ति आती है। यहाँ यङः से ब्यडः और व्यङः का ग्रहण है। ञ्यङः ब्यङः च प्रत्ययै कृत्वा यहाँ पर ''प्रत्ययग्रहणे तदन्ता ग्राप्ताः'' इस नियम से तदन्तविधि होती है। उससे ब्यडः पद का ब्यङन्त से और ब्यङ् से यह अर्थ होता है। पुनः यहाँ पर ष्यङन्तात् और व्यङ्न्तात् इन दोनों पदों में प्रातिपदिक से अन्वय होता है। और सूत्रार्थ होता है–''ञ्यङन्त प्रातिपदिक से, और ष्यङन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर चाप् प्रत्यय होता है।''

उदाहरण–आम्वष्ट्या/कारीपगन्ध्या।

सूत्रार्थ समन्वयः

आम्बष्ठया

यहाँ आम्बष्ठय शब्द ञ्यङन्त है। क्योंकि अम्बष्ठ शब्द से अम्बष्ठस्य अपत्यं स्त्री (अम्बष्ठय की पुत्री) इस अर्थ में ''वृद्धेत्कोसलाजादाञ्ञ्यङ्'' सूत्र से ञ्यङ् प्रत्यय होने पर अम्बष्ठ ञ्यङ् होने पर ञकार का ''चुटू'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ङकार का ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः' इस सूत्र से उन दोनों का लोप होने पर अम्बष्ठ य यह स्थिति होती है। इसके बाद ''तद्धितेष्वचामादेः'' इस सूत्र से आदि वृद्धि होने पर ''यस्येति च'' सूत्र से अम्बष्ठ शब्द के अन्त्य अकार का लोप होने पर आम्बष्ठ य रूप होता है। इसके बाद वर्णसम्मेलन करके आम्बष्ठय रूप बना। और इसी प्रकार आमबष्ठय प्रातिपदिक ञ्यङन्त है यह सुस्पष्ट ही है। और उससे स्त्रीत्व विवक्षा में ञ्यङन्त आम्बष्ठय प्रातिपदिक से ''यङश्चाप्'' सूत्र से चाप् प्रत्यय होने पर आम्बष्ठय-चाप् स्थिति होती है। इसके बाद चाप् प्रत्यय के चकार का ''चुटू'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर पकार की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' सूत्र से उन दोनों का लोप होने पर आम्बष्ठय आ स्थिति होती है। इसके बाद ''अकः सवर्णे दीर्घः'' इस सूत्र से दीर्घ होने पर आम्बष्ठया रूप सिद्ध होता है। अम्बष्ठ नामक जन की पुत्री यही उसका अर्थ है।

कारीषगन्ध्या

यहाँ कारीषगन्ध्य शब्द ष्यङन्त है। क्योंकि कारीषगन्धि शब्द से कारीषगन्धेः गोत्रापत्यं स्त्री इत्यर्थे (कारीषग्रन्धि की गोत्र पुत्री) अण् प्रत्यय होने पर करीषगन्धि अण् स्थिति में अण् प्रत्यय के स्थान पर ''अणिञोरनार्षयोर्गुरुपोत्तमयोः ष्यङ् गोत्रे'' इस सूत्र से ब्यङ् आदेश होने पर कारीषगन्धि ष्यङ् होने पर षकार की ''षः प्रत्ययस्य'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर, ङकार की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञक पदों का लोप होने पर कारीषगन्धि य स्थिति होती है।

इसके बाद ''तद्धितेष्वचामादेः'' सूत्र से आदिवृद्धि होने पर और ''यस्येति च'' सूत्र से कारीषगन्धि शब्द के इकार का लोप होने पर कारीषगन्ध् य रूप होता है। इसके बाद वर्णसम्मेलन करके कारीषगन्ध्य रूप बना। और इसी प्रकार कारीषगन्ध्य प्रातिपदिक ष्यङत है यह सुस्पष्ट ही है। और उससे स्त्रीत्व विवक्षा में ष्यङन्त कारीषगन्ध्य प्रातिपदिक से ''यङश्चाप्'' सूत्र से चाप् प्रत्यय होने पर कारीषगन्ध्य चाप् स्थिति होती है। इसके बाद चाप् के चकार का ''चुटू'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर, पकार की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होने पर कारीषगन्ध्य आ स्थिति होती है। इसके बाद ''अकः सवर्णे दीर्घः'' सूत्र से दीर्घ होने पर कारीषगन्ध्या रूप सिद्ध होता है। कारीषगन्धि किसी आदमी का नाम है। उसके गोत्रापत्यं स्त्री (कारीषगन्धि की पुत्री) कारीषगन्ध्या रूप बना।

(9.4) ''यूनस्तिः'' (4.1.77)

सूत्रार्थ–युवन् प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ति प्रत्यय होता है और वह तद्धित का होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। यह सूत्र ति प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में यूनः यह पञ्चम्येकवचनान्त पद है। ''ति'' यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। यहाँ सूत्र में ''स्त्रियाम्'' (7.1) यह अधिकार आ रहा है। ''प्रत्ययः'' (1/1) यह अधिकार ''परश्च'' अधिकार और ''तद्धिताः'' यह अधिकार यहाँ आ रहा है। यहाँ ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से प्रातिपदिकात् (4/1) की अनुवृत्ति आ रही है। यहाँ यूनः प्रातिपदिक से इसका विशेषण होता है। और सूत्रार्थ होता है–''युवन् प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ति प्रत्यय होता है और वह तद्धित होता है।

उदाहरण–युवति

सूत्रार्थ समन्वय

युवति

यहाँ युवन् नान्त प्रातिपदिक है। और स्त्रीत्व विवक्षा में युवन् प्रातिपदिक से ''युनस्तिः'' सूत्र से तिप् प्रत्यय होता है। उससे युवन् ति यह स्थिति होती है। इसके बाद ''न लोपः

प्रातिपदिकान्तस्ये सूत्र से युवन् शब्द के नकार का लोप होता है। और उससे युवति होता है। इसके बाद तद्धितान्त होने से ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और स्वादि कार्य होने पर युवतिः रूप सिद्ध होता है। जिसका अर्थ होता है तरुणी।

(9.5) ''शाङ्र्गखाद्यञोङीन्'' (4.1.73)

सूत्रार्थ–जातिवाचक अनुपयर्जन से शार्ङ्गनादिगण पठित अदन्त से प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीन् प्रत्यय होता है। जातिवाचक अनुपसर्जन अनन्त अदत्त और प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीन् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इससे ङीन् प्रत्यय का विधान किया गया है। इस सूत्र में दो पद हैं। शाङ्र्गखाद्यञः यह पञ्चम्येकवचनान्त पद हैं। ङीन् यह प्रथमा एकवचनान्त पद हैं। यहाँ सूत्र में ''स्त्रियाम्'' (7/1) अधिकार आता है। इस सूत्र में ''ङयाप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र ''प्रातिपदिकात्'' (5/1) सूत्र की अनुवृत्ति आती है। ''अनाद्यतष्टाप्'' सूत्र से अतः (5/1) पद की अनुवृत्ति आती है। ''जातेरस्त्रीविषयादयोपद्यात्'' इस सूत्र से जातेः'' (5/1) जाते पद की अनुवृत्ति आ रही है। अनुसर्जन से (5/1) यह अधिकार यहाँ आ रहा है। ''प्रत्ययः'' (1/1) अधिकार और ''परश्च'' यह अधिकार यहाँ आ रहा है। ''शार्ङ्गखाद्यञः'' यह समस्त पद है। और यहाँ बहुव्रीहिगर्भसमाहारद्वन्द है। और इसका विग्रह होता है-शाङ्र्गखः आदि येषां ते शाङ्र्गखादयः (शाङ्र्गख आदि में है जिसमें-शाङ्र्गखः। शार्ङ्गखादयः च अञ् च (शार्ङ्गखादिक और अञ) शाङ्र्गखाद्यञ् उससे शाङ्र्गखाद्यञः। और इसका अर्थ होता है शार्ङ्गखादि का और अञ् का। शाङ्र्गखादि का शाङ्र्गखादिगण पठित से अर्थ है। यहाँ ''जातेः'' पद और अनुपसर्जनात् पद शाङ्र्गखादि इसका विशेषण होता है। पुनः शाङ्र्गखादेः पद प्रातिपदिकात् का विशेषण होता है। अञः प्रत्ययग्रहण है। उससे ''प्रत्यय ग्रहणे तदन्ता ग्राह्याः'' इस परिभाषा से वहाँ तदन्तविधि होती है। उससे अञः का अञन्तात् अर्थ होता है। पुनः अञन्तात् का जातेः पद और अनुसर्जनात् पद विशेषण होता है। उससे जातिवाचकात् अनुपसर्जनात् अञन्तात् यह अर्थ होता है। अञन्तात् यह प्रातिपदिकात् इसका विशेषण है। अतः यह पद भी प्रातिपदिकात् का विशेषण होता है। उससे ''येन विधिस्तदन्तस्य'' परिभाषा से यहाँ तदत्तविधि होती है। उससे अदन्त प्रातिपदिक से (अदन्तात् प्रातिपदिकात्) यह अर्थ होता है। और सूत्रार्थ होता है-जातिवाचक अनुपसर्जन दो शाङ्र्गखादिगण में पठित अदन्त प्रातिपदिक से द्योत्य होने ङीन् प्रत्यय होता है। जातिवाचक अनुपसर्जन अञन्त और अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीन् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–शार्ङ्गखी। वैदी।

सूत्रार्थ समन्वय

शाङ्र्गखी

यहाँ शाङ्र्गख शब्द शाङ्र्गखाडिगण में पद्धित है। पुनः जातिवाचक है। अनुपसर्जन है और अदन्त है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में ''शाङ्र्गखाद्यजोङीन्'' सूत्र से ङीन् प्रत्यय होता है। उससे

शाङ्र्गख ङीन् यह स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोपः'' इस सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे शाङ्र्गख ई स्थिति होती है। ''यचि यम्'' सूत्र से भसंज्ञा होती है। इसके बाद ''यस्येति च'' सूत्र से अकार का लोप होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर शार्ङ्गखी रूप सिद्ध होता है। और इसकी रूप प्रक्रिया अजन्त स्त्रीलिङ्ग प्रकरण में गौरी शब्द के समान जाननी चाहिए।

बैदी

यहाँ वैद शब्द है। यह शब्द अञन्त है। पुनः जातिवाचक है। अनुसर्जन है और अदन्त है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में ''शाङ्र्गखाद्यञोङीन्'' सूत्र से ङीन् प्रत्यय होता है। उससे बैद ङीन् यह स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे बैद ई स्थिति होती है। ''यचि यम्'' सूत्र से भसंज्ञा होती है। इसके बाद ''यस्येति च'' सूत्र से अकारलोप होने पर और वर्ण सम्मेलन होने पर बैदी रूप सिद्ध होता है और इसकी रूप प्रक्रिया अजन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरण में गौरीशब्द के समान जानना चाहिए।

(9.6) ''प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यात इदाप्यसुपः'' (7.3.44)

सूत्रार्थ–प्रत्ययस्थ ककार से पूर्व के अत् के स्थान पर इत् होता है आप् परे। किन्तु युप् के आप् परे अकार के स्थान पर इकार नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र को इत् आदेश होता है। इस सूत्र में सात पद हैं। प्रत्ययस्थात् यह पञ्चमी एकवचनान्त पद है। ''कात्'' पञ्चम्यत्त पद है। ''पूर्वस्य'' यह षष्ठयन्त पद है। अतः यह षष्ठयन्त पद है। इद् प्रथमान्त पद है। आपि सप्तम्यन्त पद है। असुपः यह पञ्चम्यन्त पद है। असुपः यह पद समस्त है। यहाँ नञ् तत्पुरुषसमास है। और इसका विग्रह है न सुप् इति अयुप्। तस्मात् असुपः। प्रत्ययस्यात् यह पद कात् पद का विशेषण है। कात् पद पूर्वस्य पद का विशेषण है। पूर्वस्य पद अतः का विशेषण होता है। और इस सूत्र का अर्थ होता है ''प्रत्ययस्थ ककार से पूर्व अकार के स्थान पर आप् परे इकार होता है। किन्तु सप् के आप् परे अत् के स्थान पर इद् नहीं होता है। इत् में यहाँ तकार उच्चारण के लिए है किन्तु श्रवण के लिए नहीं होता है।

उदाहरण–कारिका, बालिका इत्यादि उदाहरण है।

सूत्रार्थ समन्वय

कारिका

यहाँ कृ धातु से ''व्वुल्तृचौ'' सूत्र से व्वुल् प्रत्यय होने पर कृ व्वुल् होने पर ''चुटू'' सूत्र से णकार की इत्संज्ञा होने पर और लकार की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ''तस्य लोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होने पर कृ वु होता है। और इसके बाद ''युवोरनाकौ'' सूत्र

से वु के स्थान पर अक आदेश होने पर कृ अक होता है। ''अचोर्ञ्णिति:'' सूत्र से ऋकार के स्थान पर वृद्धि करके कार् अक होने पर और वर्णसम्मेलन में कारक: शब्द सिद्ध होता है। इसके बाद कृदन्त होने से ''कृन्तद्धित समासाश्च'' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा में कारक के अदन्त प्रातिपदिकत्व से ''अजाद्यतष्टाप्'' सूत्र से टाप् प्रत्यय होने पर टाप् के टकार का ''चुटू'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर, पकार की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर, ''तस्यलोप:'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होने पर कारक आ स्थिति होती है। तब टाप् प्रत्यय परे अकरूप प्रत्ययस्थ ककार से पूर्व अकार के स्थान पर ''प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यातइदाप्यसुप:'' सूत्र से इत् आदेश होने पर कारिक आ स्थिति होती है। इसके बाद ''अक: सवर्णे दीर्घ:'' सूत्र से सवर्णदीर्घ होने पर कारिका रूप सिद्ध होता है।

अन्य उदाहरण हैं–बालिका, अश्वपालिका, अध्यापिका, तारिका, हारिका, धारिका, परिव्राजिका, शयिका, नायिकाय, गायिका, पाचिका, पाठिका इत्यादि।

पाठगत प्रश्न

यहाँ कुछ पाठगत प्रश्न दिये जा रहे हैं।

1. कितने लिङ्ग होते हैं वे कौन से हैं?
2. कितने स्त्री प्रत्यय हैं?
3. अजाद्यतष्टाप् सूत्र से क्या विधान है?
4. युनरित सूत्र से क्या विधान होता है?
5. दामा यहाँ कौन सा स्त्री प्रत्यय है?
6. ''यङश्चाप्'' सूत्र से क्या विधान होता है?
7. अजादिपद में कौन सा समास और कौन विग्रह हैं?
8. पुंस्त्व का शास्त्रीय लक्षण क्या है?
9. स्त्रीत्व का शास्त्रीय लक्षण क्या है?
10. नपुंसकत्व का शास्त्रीय लक्षण क्या है?
11. सिद्धान्त में लिङ्ग कितने होते हैं?

पाठ सार

यहाँ पाठ में टाप्, डाप्, ङीन् ति इन पाँच स्त्रीप्रत्ययों का वर्णन है। यहाँ सर्वप्रथम टाप् प्रत्यय विधायक ''अजाद्यतष्टाप्'' सूत्र की भाख्यान है। और उसके उदाहरण दिये गये हैं पुन: डाप्

प्रत्यय विधायक ''डावुभाभ्यामन्यतरस्याम्'' सूत्र का व्याख्यान और उदाहरण हैं। इसके बाद चाप् प्रत्यय विधायक ''यङश्चाप्'' सूत्र का व्याख्यान और उदाहरण हैं। एवं तिप्रत्ययविधायक ''युनस्तिः'' सूत्र की व्याख्या है। पुनः ङीन् प्रत्ययविधायक ''शाङ्र्गखाद्यञोङीन्'' सूत्र की व्याख्या की गई और उसके उदाहरण साधे गये हैं। ''प्रत्ययस्थाल्कात्पूर्वस्यात् इदाप्यसुपः'' सूत्र की व्याख्यान की गई और उदाहरणों की सिद्धि दर्शायी गई है।

पाठान्त प्रश्न

यहाँ पर परीक्षोपयोगी प्रष्टव्य प्रश्न दिये गये हैं–

1. ''अजाद्यतष्टाप्'' सूत्र की सोदाहरण व्याख्या लिखो?
2. ''डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम्'' सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिये?
3. ''यङश्चाप्'' सूत्र की सोदाहरण व्याख्या करो?
4. युनस्ति सूत्र की सोदाहरण व्याख्या लिखो?
5. ''शाङ्र्गखाद्यञोङीन्'' सूत्र की सोदाहरण व्याख्या करो?
6. प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यात इदाप्यसुपः सूत्र की व्याख्या लिखो?
7. कारिका प्रयोग की सिद्धि प्रक्रिया को लिखो?
8. शार्ङ्गखी प्रयोग की सिद्धिप्रक्रिया लिखो?
9. कारीबगन्ध्या प्रयोग की सिद्धि प्रक्रिया लिखो?
10. बहुयज्वा प्रयोग की सिद्धि प्रक्रिया प्रदर्शित करो?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1. तीन लिङ्ग होते हैं? स्त्रीत्व, पुरत्व और नपुंसकत्व हैं।
2. आठ स्त्री प्रत्यय होते हैं?
3. अजाद्यतष्टाप् सूत्र से टाप् प्रत्यय होते हैं?
4. यूनस्ति सूत्र से ति प्रत्यय होता है।
5. दामा यहाँ डाप् प्रत्यय है।

6. यडश्चाप् सूत्र से चाप् प्रत्यय होता है।

7. अजादिपद में बहुव्रीहि समास है। और इसका अजः आदिः येषां ते अजादयः बि यह विग्रह है।

8. सत्वरजतम प्राकृत गुणों का अपचयः स्त्रीत्व है।

10. सत्व, रज, स्तम प्राकृत गुणों का स्थिति मात्र नपुंसकत्व है?

11. पदार्थनिष्ठ।

नौवां पाठ समाप्त